पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 16.02.2019 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का

स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक 9 व 10 मार्च 2019
स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ,
ग्राम टिटोली, रोहतक
में आप सादर अमन्त्रित हैं

वर्ष-35 अंक-18 फाल्गुन-2075 दयानन्दाब्द 194 16 फरवरी से 28 फरवरी 2019 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.02.2019, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

दिल्ली में आर्य नेताओं व विद्वानों का अभिनन्दन

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के महामंत्री चतरसिंह नागर का अभिनन्दन करते अनिल आर्य व शंकरदेव आर्य (खण्डवा,मध्य प्रदेश)। द्वितीय चित्र–मेरठ से पधारे आचार्य पुनीत का स्वागत करते अनिल आर्य व ईश आर्य(हिसार), तृतीय चित्र–प्रवीन आर्य (गाजियाबाद) का अभिनन्दन।

परिषद् के गुजरात प्रान्तीय अध्यक्ष मित्रमहेश आर्य(अहमदाबाद) का अभिनन्दन

उड़ीसा से पधारे आचार्य नकुलदेव जी का स्वागत।

यमुना नगर (हरियाणा)से पधारे स्वामी सच्चिदानन्द जी का स्वागत।

ओ३म्

जहां नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

के तत्वावधान में

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी

195 वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

शुक्रवार, 1 मार्च 2019, प्रातः 10 से 12 बजे तक

स्थानः **सांसद निवास, 14 महादेव रोड, नई दिल्ली**

(निकट मैट्रो स्टेशन पटेल चौक)

मुख्य अतिथिः

श्रीमती मीनाक्षी लेखी

(संसद सदस्य)

अध्यक्षताः श्री माया प्रकाश त्यागी

(कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

यज्ञ ब्रह्माः आचार्य गवेन्द्र शास्त्री (युवा वैदिक विद्वान)

आशीर्वादः श्री आनन्द चौहान (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

–ः गरिमामयी उपस्थिति :–

श्री दर्शन अग्निहोत्री (प्रधान, वैदिक भक्ति आश्रम रोहतक)
श्री रविदेव गुप्ता (प्रधान, आर्य समाज सफदरजंग एनक्लेव)
श्री रमेश गाडी (मंत्री, आर्य समाज कालकाजी)
श्री अनिल शर्मा (मंडल अध्यक्ष, भाजपा नई दिल्ली)
श्री राजीव कुमार (निदेशक, परम डेयरी ग्रुप)
श्री भारतभूषण धूपड़ (आर्य समाज मोतीनगर)
डॉ. गजराजसिंह आर्य (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद)
श्रीमती वीना थरेजा (समाज सेवी, महरौली)
श्री वेदप्रकाश खट्टर (प्रधान, आर्य समाज महरौली)
श्री अमीरचन्द रखेजा (उपप्रधान, आर्य समाज मयुर विहार)
श्रीमती उर्मिला आर्या (प्रदेश अध्यक्ष आर्य युवती परिषद)
ठाकुर विक्रम सिंह (अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी)
डॉ. रिखबचन्द जैन (अध्यक्ष, टी. टी. ग्रुप)
प्रि. रमेश कुमारी भारद्वाज (शिक्षा भारती स्कूल)
श्री भारतभूषण मदान (मंडल अध्यक्ष, भाजपा करोल बाग)
श्री सुरेन्द्र कोहली (सुप्रसिद्ध समाज सेवी)
श्री ओम सपरा (प्रधान, उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल)
श्री यशपाल आर्य (सदस्य, शिक्षा समिति दक्षिण दिल्ली)
श्री वेदप्रकाश (प्रधान, आर्यसमाज विकास पुरी)
श्रीमती गायत्री मीना (प्रधान, आर्य समाज से.-33 नोएडा)
चौ. ब्रह्मप्रकाश मान (प्रधान, गुरूकुल खेड़ा खुर्द)
श्री सुरेन्द्र शास्त्री (मंत्री, आर्य समाज लाजपत नगर)

आप सादर आमंत्रित हैं

ऋषि लंगरः दोपहरः 12:00 बजे

निवेदक

अनिल आर्य	सुभाष आर्य	महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री
9810117464	9810667581	9013137070

Email: aryayouth@gmail.com

आर्य मान्यताओं के पुनः संस्थापक – महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

कृष्णचन्द्र गर्ग

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया।

महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त था अर्थात आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई और नाम न था। इस प्रकार उन्होंने हिन्दुओं के मनोबलों को बढ़ाया।

स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी की रचना न मानते थे। वे लिखते हैं ''जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपौड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगदर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।''

स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्ठों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और आर्यत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति–प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह का का निषेध आदि, अनेक ऐसी कुरीतियां जिनके कारण हिन्दू बदनाम हैं, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पुराणों की ऐसी मान्यताएं वेद विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाईयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही इतनी आसानी से हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनते। महर्षि दयानन्द सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने दिया – सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्य–असत्य को जानने वाला है। परन्तु पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा, हानि और निन्दा के भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में उपनिषद का निम्न श्लोक उद्धृत किया है –

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

अर्थात सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

महर्षि दयानन्द दिखावे के बाहरी चिन्हों को धर्म से न जोड़ते थे। वे जब किसी को रुद्राक्ष पहने देखते थे तो उससे कहा करते थे कि इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है। इससे मुक्ति नहीं होती। मुक्ति तो ज्ञान से होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है – 'न लिंगम् धर्म कारणं' अर्थात बाहरी चिन्हों से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता। धार्मिक तो शुभ आचरण से बनता है। महर्षि मनु ने कहा है – आचारः परमो धर्मः।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी मुसलमानों ने हमें हिन्दू नाम दिया है।

स्वामी जी श्री कृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं ''देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु तक बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि झूठे दोष श्री कृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़–पढ़ा, सुन–सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी जैसे महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।''

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य–असत्य विवेक की प्रवृत्ति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया।

स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। परन्तु यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो वे रुद्ररूप धारण करके उसे दण्ड देने को तैयार हो जाते थे।

सन 1873 में कलकत्ता में स्वामी जी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि जब तक वेद न पढ़ाए जायें संस्कृत की शिक्षा से कोई लाभ नहीं। पुराणों की बुरी शिक्षा से लोग व्यभिचारी हो जाते हैं और जो विचारशील हैं वे धर्म से पतित होकर हानिकारक बन जाते हैं।

स्वामी जी कहते थे कि पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य–सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे यह भी कहते थे ''मेरा काम लोगों के मनमन्दिरों से मूर्तियां निकलवाना है, ईंट–पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना–फोड़ना नहीं है।

सन 1874 में मुम्बई में अनेक अंग्रेज कर्मचारी स्वामी जी से मिलने और उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। स्वामी जी अंग्रेजी राज्य की बहुत प्रशंसा किया करते थे। इसी कारण से बहुत से लोग उन्हें अंग्रेजों का गुप्तचर कह दिया करते थे। 1874 में नासिक में स्वामी जी ने यह भी कहा कि भारत में सही अर्थों में अंग्रेज ही ब्राह्मण हैं।

सन 1878 में अजमेर में राय बहादुर श्यामसुन्दरलाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया – मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्य समाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जाएगा।

सन 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सांयकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति कब होगी। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा होना मुश्किल है।

वेदों के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं ''मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।'' महर्षि का यह मत सभी ऋषि–मुनियों के मत के अनुकूल ही है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं – **बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे।** अर्थात वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि मनु कहते हैं – **यस्तर्केणानुसन्धते तं धर्मं वेद नेतरः।** अर्थात जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं। महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वर कृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री–पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और वे मानते थे कि वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द का स्वाध्यय बहुत विस्तृत था। ''भ्रन्ति निवारण'' पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं – ''मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।''

अंग्रेजी राज्य के सम्बन्ध में – 23 नवम्बर 1880 को थियोसौफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवास्तिकी को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्यचार से कुछ–कुछ छुटकारा मिला है। ''मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं। इसका कारण इंग्लैण्ड की महारानी, पारलियामैंट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान और सुशील हैं। अगर ऐसा न होता तो स्वतन्त्रता से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठिन था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।''

सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल एम.ए. के विचार – ''इस महान ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।''

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी – ''हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।''

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था – हमारा सबसे अधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है।

महान कहानीकार उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द की एक कहानी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा हैं कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। ''मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएं अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।

831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा, फोन–0172–4010679

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन,दिल्ली की झलकियां

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी सम्बोधित करते हुए, साथ में अनिल आर्य, प्रवीन आर्या, उर्मिला आर्या, इन्दु आर्या,स्वामी चन्द्रवेश जी(गाजियाबाद), स्वामी नकुलदेव जी (उड़ीसा), स्वामी अभयानन्द जी (सहारनपुर) आदि।

आर्य महासम्मेलन के भव्य पण्डाल का सुन्दर दृश्य

वैदिक विद्वान डा.महेश विद्यालंकार का अभिनन्दन करते आचार्य अखिलेश्वर जी, स्वामी आर्यवेश जी व अनिल आर्य। द्वितीय चित्र–दीप प्रज्जवलित करते अमेरिका से पधारे गोपाल दुर्गा, साथ में सुदर्शन न्यूज के मुख्य सम्पादक सुरेश चव्हान, प्रवीन आर्य,डा. आनन्द कुमार, रामकृष्ण शास्त्री (बहरोड़), आनन्दसिंह आर्य व स्वतन्त्र कुकरेजा (करनाल)।

निगम पार्षद कैलाश सांकला का अभिनन्दन करते रविदेव गुप्ता,अनिल आर्य, महेन्द्र भाई व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री। द्वितीय चित्र–बंग्लादेश से पधारे आचार्य सुभाष शास्त्री का स्वागत करते अनिल आर्य व डा.आनन्द कुमार।

परिषद् के कर्मठ प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता व दिल्ली प्रदेश के महामंत्री अरूण आर्य का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश जी,अनिल आर्य,यशोवीर आर्य,प्रवीन आर्या आदि ।

आर्य जनता का विश्वास है हमारे साथ!!!

आर्य जनता का विश्वास है हमारे साथ!!!

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली की झलकियां

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जम्मू कश्मीर के प्रान्तीय अध्यक्ष सुभाष बब्बर का अभिनन्दन करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी व परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य। द्वितीय चित्र–राजस्थान के प्रान्तीय अध्यक्ष रामकृष्ण शास्त्री,तृतीय चित्र–परिषद् के झारखण्ड प्रान्तीय अध्यक्ष कृष्णप्रसाद कौटिल्य जी अभिनन्दन करते डा.आनन्द कुमार (आई.पी.एस.) व अनिल आर्य।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् बहादुरगढ़ के अध्यक्ष हरिआम दलाल व मुरादाबाद के अध्यक्ष अंकित आर्य का स्वागत करते रामकुमार आर्य,राजेन्द्र सहरावत,महेन्द्र भाई व यशपाल यश (जयपुर)। द्वितीय चित्र–आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव के प्रधान डा. धर्मवीर आर्य व मोती बाग के प्रधान महावीरसिंह आर्य का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश जी, रामकुमार आर्य व वेदप्रकाश आर्य।

शोभायात्रा से पंजाबी बाग,मादीपुर क्षेत्र ओम् के जयकारों से गूंज उठा : नेतृत्व करते स्वामी आर्यवेश जी,अनिल आर्य,प्रवीन आर्या, डा. विपिन खेड़ा, मानवेन्द्र शास्त्री, रामकृष्ण शास्त्री आदि।

समाजसेवी संगीता व राकेश चौधरी (द्वारका) का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य अखिलेश्वर जी, अनिल आर्य व प्रवीन आर्या। द्वितीय चित्र– गन्नौर (सोनीपत) आर्य समाज के प्रधान राजेन्द्र गाबा, हरिचन्द स्नेही, मनोहरलाल चावला आदि के अभिनन्दन का सुन्दर द्रश्य।

पंजाबी बिरादरी के अध्यक्ष इन्द्रजीत सरना,संजीव आर्य की टीम का स्वागत द्रश्य। द्वितीय चित्र–सतीराम(बिट्टु टिकी वाला) का स्वागत करते अनिल आर्य,सुरेश आर्य व इन्द्रजीत सरना।

राष्ट्रीय वेद सम्मेलन दिल्ली में

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में दिनांक 9 व 10 मार्च 2019 को राष्ट्रीय वेद सम्मेलन आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। आप सभी सादर आमन्त्रित है। –चतरसिंह नागर, महामंत्री

अपीलः केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित।

– अनिल आर्य

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री सत्यपाल भाटिया (आर्य समाज, गांधी नगर) का निधन।
2. श्रीमती उषा सचदेवा (धर्मपत्नि श्री विश्वबन्धु आर्य, मोदी नगर,उ.प्र.) का निधन।
3. श्री वेदप्रकाश छतवाल (आर्य समाज, पश्चिमी पंजाबी बाग) का निधन।
4. श्री डी.एस.आर्य (आर्य समाज, बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी) का निधन।
5. श्री दयानन्द त्यागी (प्रधान, आर्य समाज, विकास नगर, उतम नगर) का निधन।
6. श्रीमती सावित्री चौधरी (आर्य समाज,रोड, रानी बाग) का निधन।
7. डॉ. एस.सी. भाटिया, आर्य समाज त्रिनगर का निधन।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970